Class- BA(Hons.) Sanaskrit 4th SEM

Subject- Modern Sanskrit Literature

Topic- आधुनिक संस्कृत साहित्य का सामान्य सर्वेक्षण ।

आधुनिक संस्कृत साहित्य का सामान्य सर्वेक्षण करते हुये अभी तक पण्डिता क्षमाराव, लीलाराव दयाल, हरिदास सिद्धान्त वागीश तथा बच्चूलाल अवस्थी जैसे आधुनिक संस्कृत विद्वानों के विषय में हमने अध्ययन किया है । इसी सन्दर्भ में आधुनिक संस्कृत साहित्य में मूलशंकर माणिकलाल याज्ञिक के योगदान का वर्णन करेंगे ।

मूलशंकर माणिकलाल याज्ञिक का जन्म गुजरात के खेड़ा जनपद के नटपुर (नडियाद) नामक गांव में 31 जनवरी 1886 ईसवी को हुआ था । इनकी मृत्यु 13 नवंबर 1965 ईस्वी में हुई । इनके पिता का नाम माणिकलाल और माता का नाम अतिलक्ष्मी था । इनकी प्रारंभिक शिक्षा नाडियाद में हुई थी । उच्चशिक्षा हेतु यह बड़ौदा गए ।

1907ई. में इन्होंने बड़ौदा कॉलेज से बीए की परीक्षा उत्तीर्ण की । पारिवारिक जिम्मेदारी के कारण इन्होंने बैंक में नौकरी की । इन्होंने 1924ई. में शिनौर में शिक्षक के रूप में सेवा की । बाद में यह प्राचार्य भी रहे । अध्यापन काल में ही इनकी काव्य प्रतिभा जागृत हुई ।

याज्ञिक जी सरस्वती के वरद पुत्र थे । इन्हें वेद, पुराण, धर्मशास्त्र, संगीतशास्त्र, दर्शनशास्त्र, नाट्यशास्त्र और राजनीति आदि का पूर्ण ज्ञान था । इनका जीवन साधक के समान तपोमय था । इन्होंने अध्यापन कार्य के साथ लेखन कार्य भी किया । वाराणसी की विद्वत्परिषद में इन्हें 'साहित्यमणि' की उपाधि से विभूषित किया गया । शंकराचार्य द्वारा इन्हें 'श्रीविद्या' की उपाधि प्राप्त हुई ।

संस्कृत में इन्होंने पंडित गोपालाचार्य उत्गीकर के साथ विष्णु पुराण की कथाओं को 1917 इसी में सरल गद्य में प्रस्तुत किया । इन्होंने राष्ट्र निर्माताओं के चरित का गहन

अध्ययन और अनुसंधान करके तीन ऐतिहासिक नाटकों का प्रणयन किया- **'प्रताप विजयम्'**, **'संयोगिता स्वयंवरम्'** और **'छत्रपति साम्राज्यम्'**।

'प्रताप विजयम्' महाराणा के जीवन एवं पराक्रम को आधार बनाकर रचित 9 अंकों का वीर रस से परिपूर्ण ऐतिहासिक नाटक है 1926ई. में प्रणीत इस नाटक की शैली सरल है। अलंकृत भाषा में रचित इस नाटक में संगीत का प्रयोग सभी अंकों में हुआ है। सभी वर्ग के पात्र संस्कृत भाषा में बोलते हैं। कवि ने युद्ध नीति विषयक अपने पांडित्य का अपूर्व परिचय इस नाटक में दिया है।

'संयोगितास्वयंवरम्' नाटक में भी संगीत का अच्छा पुट मिलता है। मल्हार राग में संगीत पद गीत नाटक को विलक्षण गति देता है। याज्ञिक जी की नाट्य कला का एक वैशिष्टय यह है कि वह संगीत तथा नृत्य द्वारा अभीष्ट वातावरण पैदा करने में न केवल सक्षम है अपितु विलक्षण भी है।

नाटकों के अतिरिक्त उनकी अन्य संस्कृत रचनाएं भी हैं **'पुराणकथातरंगिणी'**- यह विष्णु कथा पर आधारित ग्रंथ है। **'विजय लहरी'** यह गीतिकाव्य है। श्री याज्ञिक जी ने जम्बूद्वीप के मानचित्र के साथ सूर्यवंश-चंद्रवंश की वंशावली तैयार कर ऐतिहासिक अनुसंधान के क्षेत्र में भी अपनी प्रतिभा का प्रखर प्रदर्शन किया है। इन्होंने संस्कृत भाषा में रचना के साथ ही गुजराती में भी रचना की है।

इनकी गुजराती कृतियां हैं- हर्षदिग्विजय, नैषधचरित, तुलनात्मक धर्मविचार, आपणुं प्राचीन राज्यतंत्र, गुजराती अर्थ सहित सत्यधर्मप्रकाश तथा मेवाड़प्रतिष्ठा। इनके संस्कृत नाटकों ने इन्हें कालजयी यश प्रदान किया। इनके ग्रंथों से इनके वेद, वेदांग, पुराण, धर्मशास्त्र, साहित्य, अर्थशास्त्र, आयुर्वेद, संगीतशास्त्र इत्यादि के ज्ञान का निर्देश प्राप्त होता है। इस सृजनशीलता ने इन्हें वाराणसी की विद्वत् संसद की मानार्ह उपाधि 'साहित्यमणि' अर्जित कराई थी।

इस प्रकार इनका व्यक्तित्व स्वयमेव मृगेन्द्रता संपन्न है। इनकी कृतियाँ इनकी दिव्य प्रतिभा को उजागर करती हैं। याज्ञिक जी राष्ट्रीय चेतना और नवजागरण के साथ ही सामाजिक समानता के प्रबल समर्थक रहे हैं।